# Hkkoh v/;kidk ds jkstxkj ,oa O;kolkf;d ixfr ds volj

[1]Mk0 e|dq'k dqekj] [2]Mk0 ujsUnz lkjLor
[1]सहायक अध्यापक, प्राथमिक विद्यालय जोगीपुरा, गंगोह, सहारनपुर, उ0प्र0, भारत
[2]असि० प्रोफेसर (मानदेय), भौतिकी विभाग, जे0वी0 जैन डिग्री कॉलेज, सहारनपुर, उ0प्र0, भारत

## Lkjka'k&

शिक्षा मानव जीवन के निर्माण की आधारशिला है। शिक्षा के तीन ध्रुवों में शिक्षक को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। शिक्षक शिक्षा व्यवस्था की नींव माना जाता है। देश में विभिन्न स्तरों के लिए विभिन्न स्तरों पर अध्यापक शिक्षा संस्थान भावी अध्यापकों को तैयार कर रहे है। निजीकरण के कारण बड़े पैमाने पर निजी अध्यापक शिक्षक संस्थान प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में भावी अध्यापकों को तैयार कर रहे है। रोजगार की उपलब्ध संख्या तथा भावी अध्यापकों की संख्या में संतुलन का अभाव है। जिस संख्या में भावी अध्यापक तैयार हो रहे है उस संख्या में रोजगार के अवसर पर्याप्त नहीं है। जिससे भावी अध्यापकों को उनकी योग्यता के अनुसार रोजगार नहीं मिल पा रहा है। जिससे उनमें निराशा, हताशा, कुण्ठा तथा द्वन्द की भावना पैदा हो रही है। अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता को बढ़ाकर, रोजगार के अवसर बढ़ाकर तथा गुणवत्ता न देने वाले संस्थानों को बन्द कर तथा निजी रोजगार के अवसरों की उपलब्धता उत्पन्न कर भावी अध्यापकों के रोजगार के अवसरों तथा व्यवसायिक प्रगति के अवसरों को बढ़ाया जा सकता है।

शिक्षा मानव जीवन के निर्माण की आधारशिला है। शिक्षा ही भावी नागरिकों का निर्माण करती है। शिक्षा किसी भी व्यक्ति, समाज अथवा देश की समृद्धि तथा प्रगति का सशक्त साधन है। शिक्षा को त्रिध्रुवीय प्रक्रिया माना जाता है। शिक्षक, शिक्षार्थी तथा पाठयक्रम इसके तीन ध्रुव है। इन ध्रुवों में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। शिक्षण की व्यवस्था के सफल, कुशल व उद्देश्यपूर्ण संचालन के लिए कुशल एवं योग्य अध्यापकों का होना आवश्यक है। इस समय देश में शिक्षक शिक्षा के कई पाठ्यक्रम चल रहे है जैसे कि–

1– पूर्व प्राथमिक शिक्षक शिक्षा संस्थाऐं– एन0टी0टी0
2– प्राथमिक शिक्षक संस्थाऐं– डायट पत्राचार पाठ्यक्रम
3– माध्यमिक शिक्षक संस्थाऐंः– शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, शिक्षक शिक्षा विभाग, केन्द्रीय शिक्षा संस्थान, राज्य शिक्षा, संस्थान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान तथा पत्राचार पाठ्यक्रम आदि।
4– विशिष्ट बच्चों के लिए शिक्षक शिक्षा संस्थाऐं
5– विशिष्ट पाठ्य विषयों एवं क्रियाओं की प्रशिक्षण संस्थाऐंः– भाषा, कला, तथा गृह विज्ञान, प्रशिक्षण महाविद्यालय एवं विभाग
6– शारीरिक शिक्षा प्रशिक्षण महाविद्यालय एंव विभाग।

सेवाकालीन शिक्षक शिक्षा के दो रूप हैः– सेवारत अप्रशिक्षित शिक्षकों का प्रशिक्षण तथा सेवारत प्रशिक्षित शिक्षकों की सतत शिक्षा।

सेवारत अप्रशिक्षित शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए– पूर्ण कालीक, अल्पकालीक तथा पत्राचार पाठ्यक्रम चलाये जा रहे है।

सेवारत प्रशिक्षित शिक्षकों की सतत शिक्षा का मुख्य उद्देश्य शिक्षक शिक्षा सम्बन्धी अद्यतन जानकारी देना, अद्यतन शिक्षण विधियों व कौशलों में प्रशिक्षित करना तथा नई परिस्थितियों के लिए तैयार करना।

एन0सी0टी0ई0 देश में अध्यापक शिक्षा संस्थाओं के लिए मानदण्ड तथा शिक्षकों की न्यूनतम शैक्षिक योग्यता, पाठ्यक्रम पुनर्बोधन पाठ्यक्रम, निरीक्षण, सर्वेक्षण एवं सुझाव देने का कार्य कर रही है।

एन0सी0ई0आर0टी0 प्राथमिक व माध्यमिक स्तर के लिए शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम, पाठ्यक्रम निर्माण, सर्वेक्षण एवं सुझाव का कार्य कर रही है। दो वर्षीय एवं चार वर्षीय बी0एड0 कार्यक्रम, दो वर्षीय एम0एड0 तथा पी0एच0डी0 कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं । यू0जी0सी0 द्वारा नेट परीक्षा का आयोजन उच्च शिक्षा स्तर के लिए शिक्षकों की योग्यता का चयन करने के लिए किया जा रहा है।

आज भूमण्डलीयकरण व उदारीकरण के कारण शिक्षा का भी निजीकरण हुआ है। बड़ी संख्या में निजी अध्यापक शिक्षा संस्थान विभिन्न स्तरों पर अध्यापक शिक्षा प्रदान कर रहे है। सरकारी एवं निजी संस्थानों से प्रतिवर्ष लाखों भावी अध्यापक शिक्षा पूरी कर निकलते है। देश में उपलब्ध रोजगार के अवसर इन संस्थानों से निकलने वाले भावी अध्यापकों की तुलना में अत्यन्त कम है। रोजगार के अवसरों की कमी से भावी अध्यापकों की बेरोजगारी की संख्या में प्रतिवर्ष वृद्धि होती जा रही है। पर्याप्त रोजगार के अवसर न उपलब्ध होने से या योग्यता के अनुरूप रोजगार, वेतन व कार्यदशाऐं न मिल सकने के कारण उच्च योग्यताधारी शिक्षक निम्न स्तर पर पढ़ाने को मजबूर है। पी0एच0डी0, एम0फिल, एम0एड0 तथा बी0एड0 योग्यताधारी अध्यापक प्राथमिक स्तर पर अध्यापन करते नजर आते है। सरकार द्वारा शिक्षकों की भर्ती, बेसिक शिक्षा परिषद, माध्यमिक शिक्षा आयोग तथा लोकसेवा आयोग द्वारा शैक्षणिक मैरिट या परीक्षाओं के माध्यम से की जाती है। इन आयोगों में ही सदस्यों की संख्या पूरी न होने, निश्चित समयबद्ध भर्ती कार्यक्रम न होने, अत्यन्त कम पदों पर भर्ती, भ्रष्टाचार, राजनैतिक प्रतिबद्धता की कमी तथा अनेक भर्तियों के न्यायालय में चले जाने तथा लम्बित रहने से शिक्षक भर्तियां कई–कई वर्षों तक पूरी नहीं हो पाती जबकि दूसरी तरफ प्रतिवर्ष भावी अध्यापकों की संख्या में वृद्धि होती रहती है जिससे भावी अध्यापकों में तनाव, कुण्ठा, हताशा तथा निराशा बढ़ती जाती है जिससे समाज में असंतोष का जन्म होता है जो समाज के लिए घातक है। केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में 40 प्रतिशत तथा तकनीकी संस्थानों में 33 प्रतिशत पद रिक्त है। अकेले उ0प्र0 में ही कई लाख, बी0एड0, टी0ई0टी0 उत्तीर्ण अभ्यर्थी बेरोजगार है। उत्तराखण्ड, महाराष्ट्र, दिल्ली तथा बिहार आदि प्रदेशों में कमोवेश यही स्थिति है। अध्यापक शिक्षा संस्थानों में गुणवत्ता की कमी भी एक महत्वपूर्ण कारण है। निजीकरण के कारण देश में निजी अध्यापक शिक्षा संस्थानों की बेहताशा वृद्धि हुई । लेकिन ये संस्थान अपेक्षित गुणवत्तापूर्ण अध्यापक शिक्षा देने में असमर्थ है। योग्य शिक्षकों की कमी भौतिक व मानवीय संसाधनों की कमी समुचित शैक्षणिक वातावरण की कमी, पर्याप्त मोनिटरिंग की कमी, प्रशिक्षण ले रहे भावी शिक्षकों की कक्षा व पाठ्यक्रम में रूचि व उपस्थिति की कमी आदि होने से गुणवत्ता में कमी आयी है। दूसरी ओर सुखद पहलू यह है कि योग्य, अनुभवी, व कौशलों में दक्ष भावी अध्यापक सरकारी व निजी क्षेत्रों में अच्छे रोजगार भी प्राप्त कर रहे है। भावी अध्यापक सरकारी व निजी क्षेत्रों में अध्यापन के अलावा, ऑनलाईन टीचिंग, रिसर्च, सेमिनार व वर्कशॉप के आयोजन, होम टयूशन, कोचिंग सेन्टर्स में पढ़ाकर भी अध्यापन कर रहे है। व्यावसायिक प्रगति के लिए सेवारत अध्यापक पत्राचार पाठ्यक्रमों से एम0एड0, एम0फिल कर सकते है। नेट व पी0एच0डी0 करके भी शैक्षणिक स्तर में प्रगति कर सकते है तथा अपने व्यवसाय में उच्च पदों को प्राप्त कर सकते है।

भावी अध्यापकों के रोजगार एवं व्यवसायिक प्रगति के अवसरों को हम बढ़ाने के लिए ऐसी नीतियां बनाये ताकि भावी अध्यापकों की सरकारी निर्भरता को कम किया जा सकें और उन्हें आत्मनिर्भर बनाये जा सकें। गुणवत्तापरक शिक्षा प्रदान करने वाले अध्यापक शिक्षा संस्थानों को संवर्धन तथा गुणवत्तापरक शिक्षा न देने वाले तथा मानदण्डों को पूरा न करने वाले संस्थाओं को बन्द कर देना चाहिए। समय–समय पर संस्थानों की मोनिटरिंग ईमानदारी व पारदर्शिता से की जानी चाहिए। प्रवेश परीक्षा के माध्यम से केवल योग्य अभ्यर्थियों को ही प्रवेश दिया जाना चाहिए। नेक द्वारा आंकलन अनिवार्य कर देना चाहिए। ज्ञान आधारित शिक्षा के बजाय कौशल केन्द्रित शिक्षण पर बल दिया जाना चाहिए। व्यावसायिक परामर्श केन्द्र व रोजगार कार्यालय संस्थानों में खोलने चाहिए। जिससे कि भावी अध्यापकों को रोजगार सम्बन्धी योग्यताओं, चयन मानदण्डों आदि की जानकारी समय–समय पर मिल सकें। सूचना व सम्प्रेषण तकनीकी के प्रयोग व अध्यापकों में उच्च मूल्यों के समन्वित विकास पर बल देना चाहिए । हमें इस प्रकार से भावी अध्यापकों को तैयार करना चाहिए ताकि वे सशक्त भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें।

## lUnHk xUFk lph

एम0एच0आर0डी0 : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 शिक्षा विभाग, एम0एच0आर0डी0 नई दिल्ली।

एन0सी0ई0आर0टी0 : फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली, 1983–88

चन्द्रैया ,के0 : ओकुपेशनल स्ट्रेस इन टीचर्स, ए0पी0एच0 पब्लिसिंग कारपोरेशन, नई दिल्ली।

किशन, एन0आर0 : ग्लोबल ट्रैण्डस इन टीचर एजूकेशन ए0पी0एच0 पब्लिसिंग कारपोरेशन, नई दिल्ली–2010

Malhotra Abhinav : http://timesofindia.indiatiems.com/city/Kanpur/BED-course

लाल एवं शर्मा : भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ– 2011

शर्मा ज्योति व पाण्डेय रामसकल : उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा–2012

सिंह नरेश : कैरियर इन टिचिंग, इम्प्लायमेन्ट न्यूज.गर्व0.इन